

सूरह यासीन - 36

سُورَةُ الْيَاسِينِ

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

- सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में रसूल के सत्य होने पर कुर्आन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है।
- तौहीद की निशानियाँ बता कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस से लगता है कि प्रलय आ गई है।
- रिसालत, तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. या सीन।
2. शपथ है सुदृढ़ कुर्आन की।
3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।
4. सुपथ पर हैं।
5. (यह कुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।
6. ताकि आप सावधान करें उस जाति^[1] को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत हैं।

يَسْ

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ

1 मक्का वासियों को जिन के पास इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के पश्चात् कोई नबी नहीं आया।

7. सिद्ध हो चुका है वचन^[1] उन में से अधिकतर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।

8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक उन के गलों में, जो हड्डियों तक^[2] हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।

9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो^[3] वह देख नहीं रहे हैं।

10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।

11. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (कुर्आन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखे। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।

12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दों को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद चिन्हों^[4] को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٥

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ٦

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ٧

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٨

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ٩

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ١٠

1 अर्थात् अल्लाह का यह वचन कि: ((मैं जिन्हों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूंगा।)) (देखिये: सूरह: सज्दा, आयत: 13)

2 इस से अभिप्राय उन का कुफ़र पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है।

3 अर्थात् सत्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और न उस से लाभान्वित हो रहे हैं।

4 अर्थात् पुण्य अथवा पाप करने के लिये आते-जाते जो उन के पदचिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे-बुरे वह कर्म भी आते हैं जो उन्होंने किये हैं। और जिन का अनुसरण उन के पश्चात् किया जा रहा है।

13. तथा आप उन को^[1] एक उदाहरण दीजिये नगरवासियों का। जब आये उस में कई रसूल।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾

14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्होंने ने झुठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾

15. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे^[2] समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ﴿١٥﴾

16. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।

قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٦﴾

17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾

18. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَرْجِمَنَّكُمْ وَلِنَشْتَكَنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾

19. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे

قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ أَيْنَ ذُرِّيَّتُكُمْ

1 अर्थात् अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

2 प्राचीन युग से मुशरिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना कि एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाता-पीता तथा बाजारों में चलता-फिरता है। (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत: 7-20, सूरह अम्बिया, आयत: 3, 7, 8, सूरह मूमिनून, आयत: 24-33-34, सूरह इब्राहीम, आयत: 10-11, सूरह इस्रा, आयत: 94-95, और सूरह तगाबुन, आयत: 6)

साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन करी जाति हो।

بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अनुसरण करो रसूलों का।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝

21. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर है।

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝

22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (बंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।^[1]

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي تُرْجَعُونَ ۝

23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।

أَتَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِنْ يُرِيدُنِ الرِّحْمَنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِي عَنْهُمْ شِفَائُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُون ۝

24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ।

إِنِّي إِذْ أَتَىٰ صَلِيلٌ مُّبِينٌ ۝

25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी सुनो।

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِي ۝

26. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा: काश मेरी जाति जानती!

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ لَئِيتُ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् मैं तो उसी की बंदना करता हूँ। और करता रहूँगा। और उसी की बंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही बंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई बंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

27. जिस कारण क्षमा^[1] कर दिया मुझे
को मेरे पालनहार ने और मुझे
सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

يَسْأَعَزِّلِي رَيْتِي وَيَجْعَلَنِي مِنَ الْمَكْرُمِينَ ۝

28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की
जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना^[2]
आकाश से। और न हमें उतारने की
आवश्यकता थी।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ
السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا نُنْزِلُ فِيهِ

29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर
सहसा सब के सब बुझ गये।^[3]

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ ۝

30. हाये संताप है^[4] भक्तों पर! नहीं
आया उन के पास रसूल परन्तु वे
उस का उपहास करते रहे।

يَحْزَنُونَ عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ
إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से
पहले विनाश कर दिया बहुत से
समुदायों का। वे उन की ओर दौबारा
फिर कर नहीं आयेंगे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ
إِلَيْهِمْ لَارْجِعُونَ ۝

32. तथा सब के सब हमारे समक्ष
उपस्थित किये^[5] जायेंगे।

وَأَنْ كُلُّ لَمَّا جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

33. तथा उन^[6] के लिये एक निशानी
है निर्जीव (सूखी) धरती। जिसे हम

وَأَيُّهُمْ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا

1 अर्थात् एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

2 अर्थात् यातना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते ।

3 अर्थात् एक चीख ने उन को बुझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञात होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

4 अर्थात् प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

5 प्रलय के दिन हिसाब तथा प्रतिकार के लिये।

6 यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफ़िरो के बीच विवाद का कारण था।

ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अब, तो तुम उसी में से खाते हो।

مِنْهَا حَبَابٌ قَلِيلٌ ۖ يَأْكُلُونَ ﴿٦٠﴾

34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग़ खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٦١﴾

35. ताकि वह खाये उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٢﴾

36. पवित्र है वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति को। और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।

سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٣﴾

37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरो में हो जाते हैं।

وَايَةُ لَّهُمَّ اللَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٦٥﴾

39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।

وَالْقَمَرَ قَدَرَهُ مَنَازِلَ ۚ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٦٦﴾

40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٦٧﴾

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।

42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।

44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।

45. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।

46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मँह फेर लेते हैं।

47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे

وَاِيَّةٌ لَهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَخْشُونِ ۝

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهٖ مَا يَرْكَبُونَ ۝

وَاِنْ نَّشَاءْ نَمُغِّرْهُمْ فَلَاصِرٌ لَهُمْ اَنَّا لَمُنْقَدُونَ ۝

اِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا اِلَىٰ حِينٍ ۝

وَاِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ اَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ اِيَةٍ مِنْ اَيِّ رَبٍّ يَزَلُّهُمْ اِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَاِذَا قِيلَ لَهُمْ اَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْظِعُوْهُمْ مِنْ لَّوْنِشَاءِ اللّٰهِ اَطْعَمَهُمْ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

1 आयत नं० 33 से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के संसाधनों से संबंधित हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादियों तथा काफ़िरों कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे तो खिला सकता है? तुम तो खुले कुपथ में हो।

48. और वे कहते हैं कि कब यह (प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कड़ी ध्वनि^[1] की जो उन्हें पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे होंगे।

50. तो न वह कोई वसियत कर सकेंगे, और न अपने परिजनों में वापिस आ सकेंगे।

51. तथा फूँका^[2] जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो वह सहसा समाधियों से अपने पालनहार की ओर भागते हुये चलने लगेंगे।

52. वह कहेंगे: हाय हमारा विनाश! किस ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह से? यह वह है जिस का वचन दिया था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च कहा था रसूलों ने।

53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि। फिर सहसा वह सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

وَنُفَعِّرُ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْجِبَالِ إِلَىٰ نَارٍ ﴿٥١﴾

قَالُوا إِنَّا كُنَّا مِنْ بَعْدِكُمْ مِنْ مُّزْقَدٍ نَا هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

1 इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब बिलय हो जायेंगे।

2 इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछ। और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।
55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।
56. वे तथा उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मसूनों पर तकिये लगाये हुये।
57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।
58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।
59. तथा तुम अलग^[1] हो जाओ आज, हे अपराधियो!
60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं^[2] कहा था कि इबादत (बंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
61. तथा इबादत (बंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।
62. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?
63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें

فَالْيَوْمَ لَا ظُلْمَ لَنَفْسٍ شَيْئًا وَلَا تَحْزَنُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَاكِهِونَ ﴿٥٥﴾

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَكِفُونَ ﴿٥٦﴾

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٧﴾

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

وَأَمَّا زُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا السُّمِرُ مَوْنٌ ﴿٥٩﴾

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾

وَأَنِ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात् ईमान वालों से।

2 भाष्य के लिये देखिये: सूरह, आराफ़, आयत: 172।

दिया जा रहा था।

64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।^[1]

66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?

67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।

68. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा^[2] की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?

69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य^[3] और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्आन है।

70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَنصِفُ أَرْجُلَهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ۝

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝

وَمَنْ تُعَيِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَكَلَّا يَعْقِلُونَ ۝

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

1 यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिरक) नहीं करते थे। देखिये: सूरह अनआम, आयत: 23।

2 अर्थात् वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।

3 मक्का के मुर्तिपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अल्लाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

हो^[1] तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफिरों पर।

71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये। तो वह उन के स्वामी है?
72. तथा हम ने बश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी है। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।
73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय है। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?
74. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।
75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना है, (यातना) में^[2] उपस्थित।
76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुतः हम जानते हैं जो वह मन में रखते हैं तथा जो बोलते हैं।
77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।
78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّمَا لَهُم لَكُونُ ۖ

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَازِلُ وَمِنْهَا شَرَابٌ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّهُمْ يُنصَرُونَ ۝

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّغْضَرُونَ ۝

فَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُبْرُونَ وَمَا يَلْعَلُونَ ۝

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَبِئْسَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ

1 जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीवित होना और सत्य को समझने के योग्य होना है।

2 अर्थात् वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

وَهُوَ رَئِيمٌ ۝

को भूल गया। उस ने कहा: कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝

79. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ
مِنْهُ تُوقَدُونَ ۝

80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग^[1] सुलगाते हो।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ
عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝

81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

82. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना है: हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝

83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे^[2] जाओगे।

1 भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे वृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो, तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

2 प्रलय के दिन अपने कर्मों का प्रतिकार प्राप्त करने के लिये।